अमताक्खर

कविता संग्रह भाग 1

कपिल सहारे

Copyright Disclaimer

This is a work of fiction. Names, characters, places and incidents either are the product of the author's imagination or are use fictitiously. Any resemblance to actual persons, living or dead, events, or locales is entirely coincidental.

Copyright © 2021 by Kapil Sahare

All rights reserved. No part of this book may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted, in any form or by any means—electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise—without the prior written permission of the writer.

First Edition : 2021

Book Designed & Published by : US Publication
Address : Chhatarpur, M.P

For Permission contact writer at:
E-mail : sahare.kapil01@gmail.com
Instagram : kapilsahare01

रूपरेखा

'अमताक्खर' दो शब्दों से मिलकर बना हैं, अमत और अक्खर । संस्कृत का अमृत, पाली में अमत और संस्कृत का अक्षर, पाली में अक्खर लिखा जाता हैं । अतः अमृताक्षर या अमताक्खर का शाब्दिक अर्थ हुआ, अजर-अमर रहने वाले अक्षर । 'अमताक्खर' कविता की किताब हैं, जो लेखक के उन भावों और विचारों को दर्शाती हैं, जो उनके अन्दर मौलिक रूप से समाए हुए हैं । इस किताब में 17 कविताए हैं, जो लेखक व्दारा बड़ी ही खूबसूरती से भिन्न-भिन्न भावों को प्रधान बनाकर लिखी गई हैं । हम आशा करते हैं कि आप सभी सम्माननीय पाठक इन मौलिक भावों-विचारो का भरपूर आनंद उठाते हुए लेखक की लेखनी को अथाह प्यार व सराहना करेंगे ।

स्वीकृति

मैं बहुत ही भाग्यशाली हूँ कि मुझे किसी भी विषय वस्तु के प्रति संवेदनशील होकर गहन सोच-विचार व विमर्श कर सटीक निर्णय लेने का गुण अपने माता-पिता से प्राप्त हुआ हैं, जिसके लिए मैं उनका आभार व्यक्त करता हूँ ।

सभी महान समाज सुधारक और खासतौर पर डॉ. भीमराव अंबेडकर, सम्मान्नीय गुरुजन, परिवारजन एवं मित्रो का आभार,जिन्होने पारिवारिक एवं आत्मीय रूप से जुड़कर मुझे अथाह प्यार किया, सम्मान व साथ दिया ।

अंत में बहुत सारा प्यार मेरी प्रिय पत्नी प्रेरणा और प्यारी बेटी पारमी को ।

लेखक का वर्णन

कपिल सहारे, राजीव गांधी प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, भोपाल से संबन्धित यू.आई.टी, आर.जी.पी.व्ही. कॉलेज से सिविल इंजीनियरिंग मे स्नातक हैं । विभिन्न विषयो यथा कला, लेखन, सामाजिक, धार्मिक और राजनैतिक मुद्दो मे उनकी रुचिया हैं । एक लेखक के रूप मे उनका लक्ष पाठको का मनोरंजन करते हुए उनकी चिंताओ व परेशानियों को हल करने की यथासंभव कोशिश करना हैं । वे स्वयं विपश्यना साधना के एक साधक हैं, जो उन्हे निरंतर कुछ नया जानने, सीखने व व्यक्तिगत विकास के लिए प्रयासरत रहने की प्रेरणा देती हैं । वे वर्तमान मे म.प्र. राज्य कृषि विपणन (मण्डी) बोर्ड विभाग मे इंजीनियर के पद पर कार्यरत रहते हुए लेखन कार्य मे भी समान रूप से अपना योगदान दे रहे हैं ।

विषय सूची

क्रमांक	अध्याय	पृष्ठ क्र.
1	अनसुलझी जिंदगी के अनकहे अल्फ़ाज़	6
2	प्रेम - एक मीठा संगीत	9
3	अब थमूँगा नहीं, तुझे कह दूँ रे	10
4	खिलती मुस्कान	13
5	प्यार करिश्माई हैं	15
6	हाँ, मैं हूँ जिंदगी, कह दूँ तुझे	16
7	मैं हूँ, तेरी प्रेरणा	18
8	जुनून की हद ? – बेहद	20
9	होते तो सभी हैं	23
10	ये धारणाओ का संसार हैं	26
11	अल्हड़ बचपन	29
12	किशोरावस्था – बहारो का जत्था	32
13	मैं तरंगो का पुंज हूँ	34
14	तू जिंदा हैं, यही तेरी जीत रे	35
15	यादों की गुल्लक	38
16	जज़्बातों की ख़लिश	40
17	ये अंत नहीं, आगाज़ हैं	42

मैं जिंदगी हूँ..
खुशरंग, खिल्दंग, बेपरवाह, खुशमिजाज़,
हाँ, मैं ही तो जिंदगी हूँ..

सुलझती हूँ,
फिर उलझती हूँ,
लड़खड़ा कर गिरकर,
फिर खड़ी हो चलती हूँ,
कभी भागती हूँ,
तो कभी ठहर जाती हूँ,
कहती तो हूँ बहुत कुछ,
फिर भी अनसुनी रह जाती हूँ,
हाँ, मैं ही तो जिंदगी हूँ..

सीधी हूँ, सरल हूँ,
उलझनों से परे हूँ,
अपने ही रंग मे मस्त,
मैं तो खुशियों से भरी हूँ,
दृश्य हूँ, अदृश्य हूँ,
कण-कण की मैं माँई हूँ,

खोज रहा बाहर संसार,
अरे, मैं तुझ मे ही तो समाई हूँ,
हाँ, मैं ही तो जिंदगी हूँ..

फूल हूँ, बहार हूँ,
धूप मैं, बयार हूँ,
जन्म हूँ, बांझ हूँ,
सुबह मैं, सांझ हूँ
हंसी हूँ, रीत हूँ,
दुःख मैं, मीत हूँ,
गहरी हूँ, छिछली हूँ,
परिंदा मैं, मछली हूँ,
इच्छा हूँ, प्यार हूँ,
रास्ता मैं, खाई हूँ,
जंगल हूँ, खेत हूँ,
पहाड़ मैं, रेत हूँ,
काल हूँ, कर्म हूँ,
जाति मैं, धर्म हूँ,
प्रशंसा हूँ, हसाई हूँ,
वैद्य मैं, कसाई हूँ,

अंधेरा हूँ, घुटन हूँ,
लानत मैं, चुभन हूँ,
जिंदगी हूँ, मौत हूँ,
हार मैं, जीत हूँ,
खुशी हूँ, साथ हूँ,
मलंग मैं, आस हूँ,
हाँ, मैं ही तो जिंदगी हूँ..

ये सब मेरे ही तो अक्स हैं बावरे,
हाँ, मैं सिक्के के दो भाग हूँ, लेकिन एक हूँ,
हाँ, मैं ही तो जिंदगी हूँ..

प्रेम - एक मीठा संगीत

अरे, कौन हैं तू ?
बता, कहाँ से आया ?
खूबसूरत तुझे,
इतना, किसने बनाया ?
होगी उसकी भी कल्पना,
बड़ी ही प्यारी,
गढ़ा तुझे जिसने,
होगी खुद वो न्यारी,
वो धन्य है तू,
जिसकी सोच मे था,
दे गया उसे मुफ्त,
जो खोज मे था,
न जानते तुझे,
न उसे पहचानते,
जो दिखे सामने उस,
पिता-माँ को मानते,
मुझे लगता, तू हैं मन का गीत,
सुकूनभरा, एक मीठा संगीत ॥

अब थमूँगा नहीं, तुझे कह दूँ रे

अचानक भभक उठा मेरा सीना,
यादों की उस महक से,
जिसकी गंध भी मुझे,
कभी सुगंध सी लगती थी,
दौड़ते थे घोड़े, मेरी नस-नस मे,
उमंग के, तरंग के, प्यार के,
खींचती थी मुझे, अपनी ओर,
वो प्यारी-प्यारी यादें,
खुशियों की बहारें,
खिलते थे कमल, मेरे नैनो मे,
फूटते थे, अश्कों के फव्वारे,
चलते थे, मेरे साए भी उसके साथ,
कभी धूप मे, तो कभी छांव मे,
नंगे पैरो ने भी कभी शिकायत नहीं की,
चाहे कितने ही थके हो, बाजारो मे,
दूर तलक साथ देते थे नयन,
और नाचते थे मेरे इशारों पर,
कभी खुल कर, तो कभी बंद होकर,
बेबसी का आलम भी क्या था यारों,

रोती थी, सिमटती थी, कचोटती थी,
लेकिन कोसती कभी न थी उसे,
जो इस काबिल भी न थी,
कि जिसके कदमो मे जहान लुटाया जाए,
नादान नहीं, कुटिल थी,
सादी नहीं, बेईमान थी,
हसी तो एक बहाना था,
साथ जो सबका पाना था,
दो पलो मे नौछावर हो जाती थी,
काम निकाल फुर्र वो जाती थी,
अरे, चल भाग कि तेरा नहीं हूँ मैं,
अपना था, अब किसी और का हूँ मैं,
कि जन्नत का कमल भी वही खिला,
साथ माँ का हर बार जहाँ मिला,
तेरा होने को था बेताब,
कि तूने हर बार मुझसे दगा किया,
पछतावा नहीं मुझे तेरे साथ का,
लेकिन समय लुटाया, इस बात का,
कितना कीमती था रे तू,
फिर भी साथ दिया जज़्बात का,

माफ करना मुझे,
कि अब मैं तेरा हूँ,
हर एक पल को, दो ले रहा हूँ,
भले चलु या रेंगु रे,
लेकिन अब थमूँगा नहीं,
तुझे कह दूँ रे,
लेकिन अब थमूँगा नहीं,
तुझे कह दूँ रे...

खिलती मुस्कान

जब मन मे, शांति समाई हो,
इरादो मे, मजबूती आई हो,
कर दुरुस्ती, अपने विचारों की,
आवाज़, सहनशक्ति के नारो की,
विचारो की सफाई हो,
मीठी वाणी तूने पाई हो,
दे अमन का पैगाम, चारो ओर,
कर दमन का विरोध, तू पुरजोर,
तब पाएगा रे, तू सुख-चैन,
देखे खुश हरियाली, तेरे नैन,
अरे, हो जा तू भी दो पल मौन,
खोज अपने आप को, हैं तू कौन ?
शब्दो मे तेरे, हो खरापन,
जैसे रोशनी का उजलापन,
तेरे कर्मो की खामोशी,
दे सफलता, करे ताजपोशी,
कर नवाचार, ऐसा अविरोध,
कि कर पाए न, कोई गतिरोध,

न बैर किसी से, न करे प्रतिशोध,
पहला शिकार तू, रहे यही बोध,
जो करे पुरुषार्थ से संधि,
न रखे अपने जोश मे मंदी,
बने सितारा, जैसी ओंस,
खुशी मिलेगी, मिले संतोष,
फैला हैं, यहाँ निर्वात बड़ा,
अरे, रूढ़िवाद का पहाड़ खड़ा,
नई ऊर्जा, दबाना चाहे,
नहीं खेती, सींचना चाहे,
चलो, उठो, अभी भरो, ऐसी उड़ान,
कि गर्व करे, देश ये महान ॥

प्यार करिश्माई हैं

रहे दुरी या नज़दीकियाँ, तो क्या हुआ,
तेरा साथ पाना, कोई जरुरी तो नहीं,
मोहताज़ थोड़ी हैं, हम इस वक्त के,
एक आस चाहिए बस, मौके की तलाश नहीं,
यूँ तो कई रंग हैं उसके, जो दिखता नहीं,
पास होकर भी दूर रहे, लेकिन निभता नहीं,
गर कफ़न ही प्यारा होता, तो मर जाता,
लेकिन कोई न हो सहारा, ये गवारा नहीं,
कई धड़कने हैं चल रही, कई थम रही,
रहता न कोई अमर, इस जग में,
ये वो पल हैं, जो घुलमिल जाते हैं,
हवाओ में, फिज़ाओ में, दुआओं में,
अरे, ये बहारे हैं, इन्हें बहने दो, खिलने दो,
देखा हैं, कुर्सी-दरवाजो पर फुल खिलता कभी,
एक नज़र ही काफी होती हैं कपिल,
छिनकर या मांगकर नहीं मिलता नबी ||

हाँ, मैं हूँ जिंदगी, कह दूँ तुझे

अरे, मैं फूल हूँ, धूल, बहार हूँ,
धूप, छांव मैं, दृश्य भी हूँ,
जन्म, बांझ हूँ, सुबह मैं, सांझ हूँ
हंसी हूँ, रीत, अदृश्य भी हूँ,
खुशरंग, खिल्दंग, खुशमिजाज़ मैं,
बेपरवाह, मलंग भी हूँ,
हाँ, मैं हूँ जिंदगी, पहले थी, बाद भी,
तेरे रहूँगी, कह दूँ तुझे ॥

सुलझती हूँ, कभी उलझती हूँ,
कभी लड़खड़ाती, फिर चलती हूँ,
भागती हूँ कभी, ठहरती हूँ कभी,
कहती बहुत, पर अनसुनी हूँ,
सीधी, सरल हूँ मैं, उलझनों से परे हूँ मैं,
अपने ही रंग मे, मस्त मैं हूँ,
हाँ, मैं हूँ जिंदगी, पहले थी, बाद भी,
तेरे रहूँगी, कह दूँ तुझे ॥

मैं गहरी, छिछली, मछली,
पंछी, इच्छा और प्यार हूँ मैं,
सुख, दुःख, रास्ता, जंगल, पहाड़ मैं
सुर, कला मैं, ताल भी हूँ,
काल, कर्म मैं, जाति, धर्म मैं,
हार, जीत मैं, आस भी हूँ,
हाँ, मैं हूँ जिंदगी, पहले थी, बाद भी,
तेरे रहूँगी, कह दूँ तुझे ॥

बाहर तू मुझे खोज रहा हैं,
मैं तुझमे ही समाई हूँ,
सोच-समझ का फेर हैं मानव,
एक पल दुःख, सूख भी मैं हूँ,
व्देष नहीं मैं, शोक नहीं मैं,
प्रेम का बीज, बुआई हूँ,
हाँ, मैं हूँ जिंदगी, पहले थी, बाद भी,
तेरे रहूँगी, कह दूँ तुझे ॥

मैं हूँ, तेरी प्रेरणा

लेखनी मेरी जादू भरी,
हर कोई प्रतिभा का दीवाना,
रुचिकर स्वभाव मेरा,
क्योकि मैं हूँ तेरी प्रेरणा ॥

श्रेष्ठता का चोला ओढ़े,
लाती हूँ बौद्धिक उत्तेजना,
रखती सबसे अलग नजरिया,
क्योकि मैं हूँ तेरी प्रेरणा ॥

कौशल मेरा जुदा-जुदा,
मौलिक मेरी रचना,
कलात्मकता से भरपूर हूँ,
क्योकि मैं हूँ तेरी प्रेरणा ॥

छल, धोखा और मिलावट से,
रहित मेरी कल्पना,
अभिव्यक्ति मेरी उत्तम हैं,
क्योकि मैं हूँ तेरी प्रेरणा ॥

अहा पलो मे छुपी नवीनता,
मैं आविष्कार की गर्जना,
बारीकी की मैं झलक,
क्योकि मैं हूँ तेरी प्रेरणा ॥

अंतर्दृष्टि चारो ओर,
काम मेरा आव्हान करना,
व्यक्तित्व की मैं धनी,
क्योकि मैं हूँ तेरी प्रेरणा ॥

आत्म-मंथन और चिंतन,
ऐसा दृष्टिकोण अपनाना,
जाति, रंग, धर्म से भिन्न,
क्योकि मैं हूँ तेरी प्रेरणा ॥

जुनून की हद ? – बेहद

ये तेरे बस का नहीं हैं,
कौन कहता हैं, रे तुझसे,
तू लक्ष पाने को पागल नहीं,
और बहाने बताता इससे-उससे,
कभी जुनून का स्वाद चखा हैं,
हौसले की उंगली पकड़ चला हैं,
ये बता निरंतरता के साथ बहा हैं,
तू सिर्फ दिल-दिमाग के बीच झूला हैं,
गर तूने कभी सोना चाहा,
तो क्या कोई तुझे रोक पाया हैं,
उसके लिए प्रोत्साहित हुआ हैं कभी,
या बेधड़क सोता रहा हैं,
कमियों से भरा पड़ा हैं संसार,
हर कोई कोसता हैं क्या रे,
कोई गा रहा, कोई हिमालय जा रहा,
तुझे कुछ समझ मे आ रहा क्या रे,
कभी दिखी तो नहीं तुझमे वो कशिश,
कुछ पाने की, कुछ कर गुजर जाने की,

इच्छा हैं न, इसलिए सोने को बहाने बहुत हैं,
चाहत होती, तो समझाईश न होती उठाने की,
हाँ, जुनून, शब्द छोटा, लेकिन काम बड़ा हैं,
हिमालय भी तो अपनी शान से खड़ा हैं,
लेकिन नाप ही लिया न उन नन्हें कदमो से,
जिसके पैर नहीं, अब कहाँ दु:खो का घड़ा हैं,
ये तेरे ही जीवन का संघर्ष हैं,
बुराई पर अच्छाई की जीत हैं,
अपनी दृष्टि नहीं, दृष्टिकोण बढ़ा,
इस व्दंद मे जुनून ही तेरा मीत हैं,
हाँ, मन का भटकाव तुझे रहने न दे,
एक ही जगह तुझे टिकने न दे,
हर मर्ज का इलाज़ हैं साकी,
हो जा अंतर्मुग्ध, न रहे फिर कुछ बाकि,
मानसिक संतुलन जो बनाएगा,
सात्विक विचार भी चला आएगा,
देख फिर जुनून के उजाले से,
तेरे जीवन का तमस दूर भाग जाएगा,
इसका नशा बड़ा बलवान हैं,
सफलता का करता आव्हान हैं,

ये दुर्लभ नहीं, जो कायरो को नसीब नहीं,
ये तो खुशहाली का जहान हैं,
तू बस समर्पण की भावना जगा,
मनुष्य होने का उत्सव मना,
आंतरिक ऊर्जा का संचार हो जाएगा,
जुनून तुझे मानसिक सुकून दे जाएगा ॥

होते तो सभी हैं

होते तो सभी हैं,
लेकिन मानता कोई नहीं,
जाति, रंग, शिक्षा, उम्र, तजुर्बा, पद,
भेड़चाल सी मानसिकता लिए,
कुतर्क सदा ही करता हैं,
लेकिन पूर्वाग्रही होने से मुकरता हैं ॥

किसी को क्षमता से अधिक आँके,
या फिर कुछ भी न माने,
अपना पहलू सर्वोपरि रखे,
दूजे को फालतू जाने,
जताए ऐसा कि सब जानता हैं,
पर अपनी धारणा के सिवाय, कुछ न मानता हैं ॥

उन तर्को को खारिज करे,
जो धारणाओ के विपरीत हो,
अरे, मानना तो दूर की बात,
न समझना ताकि जीत हो,
बगैर तथ्यों के राय बनाता हैं,
जो पूर्व-निर्णय से ग्रसित हो जाता हैं ॥

धारणा प्रबल वो रखकर,
जिद्दी स्वभाव हो जाता हैं,
नकारात्मक की ओर जाए खींचा,
सकारात्मक से रखता न नाता हैं,
बल मिले, ऐसा सबूत खोजता फिरे,
मिले, तो सही साबित हो जाता हैं ॥

मन को भाए, जो धारणा,
उस कुए मे, सिमट रह जाता हैं,
नए से बैर हमेशा करे,
पुराने पर ही अटक जाता हैं,
विषय का ज्ञान, भले न हो,
पर व्यक्ति पर ध्यान जरूर लगाता हैं ॥

जाति, ऊंची मालिक, नीची नौकर,
यौनी, पुरुष महान, स्त्री कमतर,
भाषा, तेरी अलग, हैं मेरी भाषा,
धर्म, मेरा श्रेष्ठ, तेरा हिन कहलाता,
क्षेत्र, गाँव गवार, शहर सुधार दे,
आयु, ज्यादा उम्र, ज्ञान बघार दे ॥

पूर्वाग्रह, सीखे हुए, अतार्किक हैं,
सामाजिक दृष्टि से हानिकार्कीक हैं,
वे संतोष सदा ही पाते हैं,
जो रूढ़िवादी होते हैं,
परिस्थितिवश ग्रसित हुआ मैं,
लेकिन तू पक्षपाती हैं ॥

अब करे नियंत्रित कौन, कानून ही ना,
मनोविज्ञान, व्यावहारिक ज्ञान ही ना,
लेकिन ये नहीं हैं स्थायी समाधान, हैं ना,
जब मिले तार्किक शिक्षा, नैतिकता, हैं ना,
फिर जगे मानवता की भावना, ज्ञान महान,
तभी तो पूर्वाग्रह से मुक्त, हो पाएगा इंसान ॥

ये धारणाओ का संसार हैं

चिंता, तनाव, दुःख, निराशा,
जीवन जीने के तरीके के परिणाम हैं,
अरे, रास्ता बदल कर तो देख,
अपने अंदर क्या जहान हैं,
ये धारणाओ का संसार हैं,
लगता खूबसूरत, बड़ा प्यारा हैं,

हर किसी की अलग धारणा हैं,
जीवन को, तो मान्यताओ को लेकर,
कोई अपनी सारी ज़िंदगी,
पुराने कुएं मे ही रहना चाहे,
तो कोई बंधनो से मुक्त होने,
अपनी नई धारणा बनाए,

मनुष्य निर्मित पत्थर को पूजो,
अपने अंदर के ईश्वर को न मानो,
जो बरगला कर ढोंग करते फिरे,
ऊन पाखंडियो की बात सर्वोपरि जानो,
ये धारणाओ का संसार हैं,
लगता खूबसूरत, बड़ा प्यारा है,

किसी की मेल खाए,
कोई बेमेल रह जाए,
ऐसा करने से ये होगा,
वैसा सोचना पाप हैं,
भांति-भांति की धारणा यारो,
कई तो अंधविश्वास का जाप हैं,

अरे, कहा गई अपनी बौद्धिक क्षमता,
सोच-विचार कर निर्णय लेने का गुण,
नैतिक मूल्य ही सर्वोपरि हैं पगले,
जानकर भी अंजान मत बन, अब सुन,
ये धारणाओ का संसार हैं,
लगता खूबसूरत, बड़ा प्यारा है,

पुत्र नहीं तो वंश नहीं,
बेटी तो पराया धन हैं,
मासिक धर्म ईश्वर का प्रकोप,
कैसा ये पागलपन हैं,
जो न माने, वो घर्म के विपरीत,
वाह री वाह, क्या सोच, कहा मगन हैं,

समाज हित मे सोचना ही वाजिब हैं,
सामाजिक धारणाओ को सर पर बैठना नहीं,
जीवन बहुमूल्य और छोटा हैं कपिल,
इसे व्यर्थ मे खर्च करना ठीक नहीं,
ये धारणाओ का संसार हैं,
लगता खूबसूरत, बड़ा प्यारा हैं ॥

अल्हड़ बचपन

जन्म से, जो आरंभ हुआ,
खेल-कूद मे खोया रहा,
मासूमियत का चोला ओढ़े,
यौवन मे जिसका अंत हुआ ॥

शैशवास्था के बाद जो आता,
लड़खड़ाते हुए चलता जाता,
तुतलाता हुआ बोलता जो,
निर्भर वो खुद ही हो जाता ॥

बचपन हैं, ऐसी शिल्पकृति,
जो बदले सामाजिक गति,
नहीं ये कोई जैविक इकाई,
वयस्क बनने का चरण हैं भाई ॥

रहे ज्ञान अभाव, गलती करे,
चले, भागे या गिर पड़े,
जानने की पिपासा ऐसी रहे,
जो मन चाहे, बस वो करे ॥

रहे बेफिक्री, न चिंता करे,
न कोई काम, बस खुशहाल रहे,
खेले, सीखे, खोज करे,
सकारात्मक रहे, मौज करे ॥

मिट्टी मे लोरना, खाना, खेलना,
नटखटी अंदाज़, झूठ बोलना,
पिता का डर और माँ की डांट,
कोई कैसे करे, बचपन को भूलना ॥

नटखटी अंदाज़, जिद्दी रुआब,
शरारत करे, बने नवाब,
घर को करे तहस-नहस,
उधम मचाए, हर पल जनाब ॥

जाने कहा गया, वो बचपन,
नटखट, शरारत, मासूम, भोलापन,
अरे, दूर रखो नन्हें-मुन्हों से,
अपनी ईच्छाओ का ओंछापन ॥

पहले था बचपन, बाहरी, प्राकृतिक,
अब हो गया, ईलेक्ट्रोनिक, आंतरिक,
व्यावहारिक रूप, कमजोर हो गया,
अजनबियो के डर से, सुरक्षित, भीतरिक ॥

खेल करता था मजबूत कभी,
बौद्धिक, भावनात्मक, शारीरिक सभी,
रचना और परिकल्पना बढ़ाकर,
कौशल विकास का अवसर हैं अभी ॥

न प्राकृतिक घटना, हैं समाज की रचना,
मत लूटो खुशियाँ, जो है जल्दी बीतना,
बचपन को न बाल श्रम मे बदलो,
क्योंकि ये नहीं फिर दुबारा लौटना ॥

किशोरावस्था – बहारो का जत्था

फूटती तरुणाई, लेकर अंगडाई,
आता बसंत, तो खिलती बहार,
मानसिक विकास की नई कोंपल,
करती परिवर्तन, नहीं रहता कुमार,

रहता कल्पना के संसार में,
करता सौंदर्य की चाह,
आदर्शो की तलाश करे,
खातिर, भविष्य की वाह,

चाहे कोई धन कमाना,
कोई अपने में ही खो जाना,
देखे सपने कैसे-कैसे,
सोचे, चाँद को नीचे लाना,

किशोरावस्था बढाए काम भावना,
नए-नए प्रपंच रोज़ सुझाए,
होकर आकर्षित फूलो की ओर,
कोई सींचे, कोई तोड़ता जाए,

नहीं डरता, चाहे कोई भी हो,
रह-रह कर खौलता, खून सदा,
मनमर्जी से चलना चाहे,
चाहे उड़ना, लेकर मज़ा,

लगे साधारण, उसे दुसरो का ज्ञान,
चाहे आकर्षण, समझे खुद को महान,
करना पड़े चाहे कोई भी काम,
फिर डींगे हो या झूठ का जहान,

जब बढ़ता अनुभव धीरे-धीरे,
हर दिशा में विस्तार होता हैं,
दया, परोपकार हो या बहादुरी,
अपने को उसमे खोता हैं,

होते हैं उनमे वैचारिक बदल,
विचारो को तार्किकता से बोले,
अपनी बुद्धि से जाँच-पड़ताल कर,
भूत को, वर्तमान के तराजू में तौले ॥

मैं तरंगो का पुंज हूँ

हर पल उगता, मैं हूँ डूबता,
दिनचर्या से, मैं हूँ जुंझता,
कोमल से बोझिल हो जाता,
गहरी नींद मे, मैं सो जाता ॥

खुश होता, तो खुशिया देता,
दुःख मे, सबके संग होता,
मन की प्रतिक्रिया, हूँ दर्शाता,
तरंगो का पुंज, मैं कहलाता ॥

देखे लाखो रंग आंखे,
मन की आंखो से हूँ दिखता,
दृश्य-अदृश्य, सभी लोको मे,
विचरण सदा, हूँ मैं करता ॥

छोड़ा भटकना, की विपश्यना,
अन्तर्मन से, देखि वेदना,
दुःखो के पार, हूँ मैं जाता,
तरंगो का पुंज, मैं कहलाता ॥

तू जिंदा हैं, यही तेरी जीत रे

रातो मे हम जागेंगे,
ख्वाबो मे हम जिएंगे,
हम जिंदगी तुझे, मान चुके,
अब तुझे ही जिएंगे,
ख्वाबो मे तूने आ के,
नींदे मेरी उड़ाई,
सुकून मेरा छिना,
मुझे दी रुलाई,
अब बांहों मे तू आ जा,
तू मुझमे समा जा,
हम साथ रहे और जिए,
ज़िंदगी, निभा जा ॥

मोहब्बत ऐसा रोग,
लगे हर किसी को,
दवाई नहीं इसकी,
न जल्दी ये तो ठीक हो,
कोई चाहे साथ पाना,
तो कोई मौज उड़ाना,
ये प्यार हैं रे, खेल नहीं,
जो हार या जीत हो,

एक ये हैं, जो एक-दो घूंट पिए,
एक वो थे, जो सारी जिंदगी जिए,
शहर उड़ते परिंदो के बने हैं,
जो हैं अब मनचले,
कट चुकी हैं सारी शाखे,
उड़ गए हीर-राँझे, लेकर घोसले,
अब तू आ जा और हमे भी सीखा जा,
तरीका प्यार का, हमे भी बता जा ॥

होने दे दिलो के मिलन को,
थोड़ा सा तू वक्त तो दे,
जी ले तू हर पल को साथी,
भावना का, पीछा छोड़ दे,
मिलेगा तुझको अंधेरा,
खो जाएगा, इसमे टूट के,
डूबेगा, ज़िंदगी तू ले के,
घरवालो से, नाता तोड़ के,

इससे मिलता किसे, क्या ?
कोई भी जाने ना,

जो चाहे रहना या जाना,
फिर वो किसी की माने ना,
ये तो ज़िंदगी हैं पगले,
नहीं कोई रीत रे,
कर शुक्रिया कि तू जिंदा हैं,
यही तेरी सबसे बड़ी जीत रे ॥

यादों की गुल्लक

बचपन मुझे सुहाता हैं,
बेफिक्री मे मौज उड़ाता हैं,
लड़कपन करता जुदा-जुदा,
बूढ़ा शांत, उग्र जवान हो जाता हैं ॥
उलझन भरी ये राहे,
खड़ी रहती खोली बाहें,
जोश-उमंग से भरा नादां,
अनुभव को छोटा पाता हैं ॥
सपने सूनहरे भविष्य के,
देखे सारे वर्तमान मे,
देखता रहे, तो गुमनाम,
पूरे करे, तो छा जाता हैं ॥
रह जाती हैं बस यादे,
अच्छी-बुरी का भार लादे,
कभी भी चला आता हैं,
घटनाओ का जहान बन जाता हैं ॥

अपनी हो या पराई,
क्या फर्क पड़ता भाई,
कोई मुस्कान बिखेरता,
तो कोई आँसू दे जाता हैं ॥
मन हैं मौजी, भटकना उसका काम,
ले जाए कभी भी, सुबह या शाम,
भटकाने मे उसे बड़ा मज़ा आता हैं,
भूत गया, वर्तमान भी चला जाता हैं ॥
खूबसूरत रंगो से सजाकर,
अपने यादों की गुल्लक,
भर जाए जब बूंद-बूंद
तो अंततः फोड़ा जाता हैं ॥
फिर बिखरी सारी पूंजी,
चुन-चुन कर देखा जाता हैं,
कोई निकलता खोटा सिक्का,
तो कभी डॉलर मिल जाता हैं ॥

जज़्बातों की ख़लिश

हाँ, रक्खे तो हैं, बहुत सारे जज़्बात,
जो अब बेमतलब से लगते हैं,
कौड़ियों के दाम लगेंगे अब तो,
गर बाज़ार मे बिकने आ गए,
कौन करता हैं, परवाह अब उनकी ?
जिन्हे बड़े नाजो से संभाल रखा था,
अंधेरी गुफा मे पड़े-पड़े क्या सोचते होंगे वे भी ?
कि हम तो यार, कभी शाही हुआ करते थे,
ये किस जालसाझ की बातों मे आ गए,
क्या ठाँठ-बाँट थी रे अपनी, नहीं ?
जब चल निकलते थे, सब साथ-साथ,
कभी आंखो की जुबानी, तो कभी खत मे,
अब तो भैया, हम भी बूढ़े हो चले हैं,
अब कहाँ रही रे, वो नुक्कड़ की चाय,
घंटो इंतज़ार और रातों का जागरण,
वो ज़ोर-ज़ोर की धकधक, वाह भई वाह,
साला, उन पलो का अपना ही मज़ा था रे,

लेकिन आज ये हलचल किस बात की हैं ?
अरे, पता करो भाई, गुदगुदी हो रही हैं,
बड़े अरसे बाद तो सूट-बूट मे निकलेंगे,
चलो, जल्दी तुम सब भी तैयार हो जाओ,
पता नहीं कब, काली घटाओ का मौसम छा जाए,
और बिजली की गड़गड़ाहट से रोशनी आ जाए ॥

ये अंत नहीं, आगाज़ हैं

रोज़ आईने मे, अपने आप को देखता हूँ,
कभी सादा, तो कभी लाजवाब दिखता हूँ,
सोचता था कभी-कभी कि तू कैसी होगी ?
क्या सच मे, तू भी मेरी परी जैसी होगी ?

वो थी नटखट, बड़ी ही नादान,
हिरनी सी सुंदर, फूलो सी मुस्कान,
जब-जब उसे देखूँ, सुकून बड़ा मैं पाता था,
निश्छल, निर्मल सा, मैं उसमे खो जाता था,

पंख पसारे, उड़ता था आसमां में,
घुल जाता ऐसे, जैसे गंध हवा में,
सात रंगो से सजी, मेरी परी थी वो,
जैसे पानी मे शक्कर, ऐसी घुली थी वो,

नहीं सूझता था मुझे, दिन हो या रात,
किसी मे नहीं थी, तुझ सी वो बात,
तेरा हाथ पकड़ने को जी करता था,
प्यार पाने को हर पल मैं तड़पता था,

ये दिल बेचारा अब क्या करे ?
धड़के या अब भी तेरे लिए दुआ करे,
अरे, दिन-रात ये घुटता-मरता हैं,
तेरे हर एक दर्द को पिया करता हैं,

तेरा हर पैतरा, अब मैंने जान लिया,
पराई थी तू, तुझे पराया मान लिया,
कि तू किसी ओर का अब नगीना हैं,
टूटे वादे सारे, मुझे न अब जीना हैं,

आ, खा ले बेटे, मेरे साथ दो निवाले,
और करदे तेरे सारे दर्द, मेरे हवाले,
नौ महीनो का दर्द मैंने सह लिया हैं,
तेरी लंबी उम्र का व्रत मैंने धर लिया हैं,

मौत कैसे छिन के ले जाएगी, मुझसे तुझे ?
खड़ी हूँ चट्टान सी, कह दूँ तुझे,
कि डर मत, मेरा आँचल तेरा पहरा हैं,
बाँधूँगी तेरे सर पर, खुशियाँ का सहरा हैं,

कि चल नाच ले, साथ मेरे खुशी मना ले,
बुझे दीपक, खुशियों के तेल से फिर जला ले,
ये जिंदगी हैं, उतार-चढ़ाव का रेला हैं,
यहाँ हर एक खेल, तमाशो का मेला हैं,

हैं बड़ी खूबसूरत, तू नजरे उठा के तो देख,
आएगी मिलने, तू उसे बुला के तो देख,
ज़िंदगी, बड़ी ही सुरीली नगमो का साज हैं,
ये अंत नहीं पगले, ये तो आगाज हैं,

अब समझ आया कि ज़िंदगी किसका साया हैं ?
ये नहीं कोई इश्क, मौज ना माया हैं,
नज़रिया बदला, तो पाया मैंने यू ही हैं,
कि ज़िंदगी कोई और नहीं, माँ बस तू ही हैं ॥

धन्यवाद